फ़िल्म ईज़ीन

सितम्बर 2024, अंक 11

सिनेमाहौल

संकलन और संपादन

अजय ब्रह्मात्मज

फ़िल्मों के किरदार

छोटी बहु, आनंद, रांभी, मुन्ना, रोज़ी, वेंगडम, सहमत, दानिश, कल्याणी, वाजिद अली शाह, शम्शुनिशा, जेम्स बॉन्ड, चित्रलेखा, मट्टो, शनिश्चरी, महाराजा, गज़ाला मीर, साजन फर्नांडिस, आरती, आनंद अकेला, बी वी प्रधान, कोगा, राज, शंभू महतो, घेला और क्रूर किरदार

आवरण: आर वर्क

cinemahaul

सितंबर, 2024

अंक 11

सिनेमाहौल

फ़िल्म ईज़ीन

संपादक

अजय ब्रह्मात्मज

कवर डिज़ाइन: रविराज पटेल

मेरी बात

सिनेमाहौल फ़िल्म ईज़ीन का 11वां अंक आपके स्क्रीन पर है। 12वें अंक के साथ एक साल का सफर पूरा होगा। पूरी उम्मीद है कि वह भी हो जाएगा। यह आप सहयोगी लेखकों, आम पाठकों और मेरे प्रकाशक (नीलाभ श्रीवास्तव और गरिमा सिन्हा) की वजह से हुआ है। मैं पिछले दो अंकों के संपादकों गीताश्री और रविराज पटेल को धन्यवाद देता हूं। मेरी अनुपस्थिति में उन्होंने ईज़ीन का कम नहीं टूटने दिया। गीताश्री ने 'साहित्यकारों का सिनेमा' और रविराज पटेल ने 'पैरलल सिनेमा' का संपादन किया।

यह अंक फिल्मों के किरदारों पर केंद्रित है। मैंने अपने आग्रह पत्र में लिखा था, 'सिनेमाहौल फ़िल्म ईज़ीन का सितंबर अंक फिल्मों के किरदारों पर होगा। मुख्य रूप से हिंदी फिल्मों के किरदार ही विषय होंगे। अगर आपको किसी अन्य भाषा की फिल्म के किसी किरदार ने प्रेरित और प्रभावित किया हो तो आप उन पर भी लिख सकते हैं।

किरदारों पर लिखते समय हम उनके गठन, निर्वहन और पर्दे पर उनकी प्रस्तुति को ध्यान में रखेंगे। लेखक और निर्देशक की दृष्टि भी हमारे विमर्श में आएगी। साथ ही उस किरदार को निभा रहे कलाकार की भूमिका और योगदान को रेखांकित करना जरूरी होगा। हमने देखा है कि कुछ किरदार कलाकारों के साथ और कुछ

कलाकार किरदारों के साथ नत्थी हो जाते हैं। वे एकमेक हो जाते हैं। यानी हम सोच भी नहीं पाते कि उस किरदार को कोई दूसरा कलाकार निभा सकता था।

किरदारों पर लिखने का कोई एक तरीका नहीं हो सकता और ना ही कोई तरीका निर्धारित किया जा सकता है। हां, हम किरदार पर ही केंद्रित रहेंगे। ये किरदार लेखन की कल्पना के होंगे, इसलिए किसी भी बायोपिक के वास्तविक किरदारों की चर्चा हम नहीं करेंगे।

मैं कुछ मित्रों को निमंत्रित कर रहा हूं। बाकी आपकी रुचि हो तो लिखने के पहले मुझ से संपर्क कर लें। कोशिश रहेगी कि एक किरदार पर एक ही लेख हो।

सोशल मीडिया के इस दौर में हम सभी इतनी हड़बड़ी में हैं कि मिले हुए संदेश भी ढंग से नहीं पढ़ते प्रोग्राम इसकी वजह से उसका मर्म नहीं समझते। मेरे आगरा पत्र पर कुछ ही लेखकों ने ध्यान दिया और उसके अनुरूप लेख लिखें। बाकी सभी कहीं ना कहीं भटक गए। उन्होंने किरदारों के साथ ही उन्हें निभा रहे कलाकारों के बारे में लिखना पसंद किया। मैं इसे उनकी लापरवाही या नासमझी नहीं कहूंगा। वास्तव में यह चलन के अनुसार चलना है। हमारी सोच ऐसे आबद्ध हो गई है कि फिल्म के किरदारों पर हम कलाकारों के बगैर सोच ही नहीं पाते। क्या ब्लेखाक किसी किरदार को लिखते समय ही किसी कलाकार को ध्यान में रखता है? कुछ मामलों में ऐसा हो सकता है, लेकिन अधिकांश लेखक किरदार गढ़ते समय

कलाकारों को ध्यान में नहीं रखते। उन किरदारों पर लिखते समय फिर क्यों कलाकारों पर जोर देना?

भारतीय संदर्भ में फिल्में देखने और सराहने का एक तरीका बन चुका है। हमारी फिल्में लोकप्रिय स्टारों पर निर्भर करती हैं, इसलिए फिल्म देखते समय किसी विशेष किरदार के बजाय हम उसे निभा रहे लोकप्रिय स्टार को ही देख रहे होते हैं। नतीजा यह होता है कि हम किरदार से अधिक कलाकारों के सम्मोहन में आ जाते हैं। यही कारण है कि फिल्मों और किरदारों पर लिखते समय हम उन कलाकारों की बातें करने लगते हैं। इस अंक के लेखों में यह सामान्य समस्या है।

फिर भी यह अंक मुझे अपनी नवीनता की वजह से प्रिय है। कम से कम लेखकों ने फिल्मों के किरदारों के बारे में सोचा। उन्होंने अपनी सोच-समझ से किरदारों को डिकोड किया। कुछ लेखकों ने किरदारों के मर्म को समझा और उनका मार्मिक विवरण पेश किया। हिंदी और अन्य भाषाओं की फिल्मों में अलहदा किरदार आते रहे हैं। उन किरदारों में ही कुछ हमें प्रिय हो जाते हैं। किरदारों के प्रिय लगने में यह कतई जरूरी नहीं है कि वह हमेशा सकारात्मक, आदर्शवादी और केंद्रीय किरदार ही हो। कुछ लेखकों ने सहयोगी किरदारों पर भी लिखा है।

भारतीय फिल्मों में किरदारों के चित्रण की विवेचना पर अधिक जोर नहीं दिया जाता। विदेशों में ऐसे अध्ययन और विवेचन की लंबी अकादमिक परंपरा है। दरअसल, भारत में फिल्मों के अध्ययन-अध्यापन और लेखन का कार्य अभी

आरंभिक अवस्था में है। मीडिया स्कूलों और शोध संस्थानों में भी सारे अध्ययन और शोध व्यक्तिपरक ही होते हैं। यही कारण है कि चरित्र और चरित्र के अध्ययन का कोई प्रतिमान विकसित नहीं हो पाया है।

इस दिशा में यह पहला प्रयास है। सिनेमाहौल फ़िल्म ईज़ीन के दूसरे साल में भी हम एक बार किरदारों पर केंद्रित अंक ले आएंगे।

फिलहाल इस अंक पर अपनी प्रतिक्रिया दें।

फ़िल्में देखें, फ़िल्में पढ़ें और फ़िल्मों पर लिखें!

अजय ब्रह्मात्मज

सितंबर 2024

मुंबई

cinemahaul@gmail.com

अनुक्रम

मुन्ना (तेजाब) 9

कमलेश पांडे

रांभी (गॉडमदर) 15

विनय शुक्ला

छोटी बहू (साहब, बीबी और ग़ुलाम) 20

जवरीमल्ल पारख

वाजिद अली शाह (शतरंज के खिलाड़ी) 61

डॉ. रक्षा गीता

वेंगडम (कांजीवरम) 78

गीताश्री

जेम्स बॉन्ड 85

चंद्र प्रकाश झा

कल्याणी (बंदिनी) 92

अनिता नेगी

आनंद अकेला (अंदाज अपना अपना) 98

अंकित शर्मा

सहमत (राजी) 104

डॉ. प्रकाश हिन्दुस्तानी

दानिश (अक्टूबर) 109

समीर कुमार

रोज़ी (गाइड) 119

ममता सिंह

आनंद (आनंद) 124

सैयद एस तौहीद

मट्टो (मट्टो की साइकिल) 131

भवतोष पाण्डेय

शम्शुनिशा (डार्लिंग्स) 135

अपर्णा दीक्षित

चित्रलेखा (चित्रलेखा) 142

मनीषा कुलश्रेष्ठ

बी वी प्रधान (सारांश) 151

अश्वनी सिंह

शनिश्चरी (रुदाली) 158

पूरण जोशी

महाराजा (महाराजा) 164

सारंग उपाध्याय

ग़ज़ाला मीर (हैदर) 171

सौम्या बैजल

साजन फर्नांडीस (द लंचबॉक्स) 178

सुप्रिया पाठक

आरती (महानगर) 184

विभा रानी

कोगा (दीक्षा) 189

संजीव चंदन

राज (दिलवाले दुल्हनिया ले जाएंगे) 195

प्रतिमा सिन्हा

शंभू महतो (दो बीघा ज़मीन) 200

अजय कुमार शर्मा

घेला (धाड़) 219

फागुन भवसार

गब्बर के बहाने खलनायकों के किरदार की पड़ताल 226

यूनुस ख़ान

तेजा (जंजीर) 237

इक़बाल रिज़वी

मुन्ना (तेजाब)

कमलेश पांडे

(एन चंद्रा निर्देशित 'तेजाब' का लेखन कमलेश पांडे ने किया था। फिल्म के मुख्य किरदार मुन्ना की भूमिका में अनिल कपूर थे। यह फिल्म 1988 में प्रदर्शित हुई थी।)

अपनी फिल्मों में से किसी एक प्रिय किरदार को चुन पाना थोड़ा मुश्किल काम होता है। लगभग हर फिल्म में कोई ना कोई किरदार लेखक को प्रिय होता है। वह उसे बार-बार लिखना चाहता है और अनेक फिल्मों में ले आता है।

मुझे अपनी फिल्म 'तेजाब' का मुन्ना बहुत पसंद है। यह मेरी दूसरी फिल्म थी। मैं नया-नया था और फिल्में लिख रहा था। एन चंद्रा फिल्म की कहानी लेकर मेरे पास आए। मैंने उनकी कहानी सुनी। कहानी सुनने के बाद मैंने उनसे कहा यार चंदू 'तेजाब' आज की 'आवारा' हो सकती है। यह मैं 1987 की बात कर रहा हूं। एन चंद्रा चौंके और उन्होंने पूछा, 'तुम्हारा क्या मतलब है?' मेरा जवाब था कि अगर राज कपूर आज जिंदा होते और वह 'आवारा' जैसी फिल्म बनाना चाहते तो 'तेजाब' बनाते। 'तेजाब' में बहुत सारे सीन वास्तव में 'आवारा' को ट्रिब्यूट हैं। और जो किरदार है मुन्ना का... बल्कि जब मैं अनिल कपूर को इस फिल्म के बारे